डॉ. राधाकृष्णन: दर्शन और शिक्षा

- प्रदीप डहेरिया

भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन ने अपना जन्मदिन शिक्षकों को समर्पित किया। इसकी भी कहानी है। वर्ष 1962 में उनके कुछ प्रशंसकों और शिष्यों ने उनका जन्मदिन मनाने की इच्छा जाहिर की तब उन्होंने कहा 'मेरे लिए इससे बड़े सम्मान की बात और कुछ हो ही नहीं सकती कि मेरा जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए।' तभी से 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाने लगा। डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद्, महान दार्शनिक, एक आस्थावान विचारक और मानवतावादी व्यक्ति थे। आपने भारत के उपराष्ट्रपति के रूप में दो कार्यकाल पूरे किए। इसके पश्चात आपने 1962 में भारत के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद को भी सुशोभित किया।

जब 1962 में डॉ राधाकृष्णन ने भारत के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया तब इस अवसर पर जानेमाने दार्शनिक बर्ट्रेंड रशेल ने कहा था, 'भारतीय गणराज्य ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को राष्ट्रपति चुना। यह विश्व के दर्शनशास्त्र का सम्मान है। मैं उनके राष्ट्रपति बनने से बेहद खुश हूं। प्लेटो ने कहा था कि दार्शनिक को राजा और राजा को दार्शनिक होना चाहिए। डॉ राधाकृष्णन को राष्ट्रपति बनाकर भारतीय गणराज्य ने प्लेटो को सच्ची श्रद्धांजलि दी है।'

आपने अनेक पुस्तकें लिखी, जो आपकी महानता को प्रमाणित करती हैं। आपकी प्रमुख पुस्तकों में: इंडियन फिलासफी, द हिंदू व्यू आफ लाइफ, रिलीफ एंड सोसायटी, द भगवतगीता, द प्रिंसिपल आफ द उपनिषद, द ब्रह्मसूत्र, फिलासफी आफ रवींद्रनाथ टैगोर आदि प्रमुख हैं। ये पुस्तकें सम्पूर्ण विश्व को भारत की गौरवशाली गाथा के बारे में ज्ञान कराती हैं। वे निष्काम कर्मयोगी, करुण ह्रदयी, धैर्यवान, विवेकशील और विनम्र थे। उनका आदर्शमय जीवन, भारतीयों के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणास्रोत है।

डॉ. राधाकृष्णन राष्ट्रपति बनने से पहले महान एवं प्रतिष्ठित शिक्षक थे। शिक्षक, जीवन में ज्ञान प्रदान करने के साथ ही जीवन को दिशा देने का भी कार्य करते हैं। शिक्षक, ज्ञान के स्रोत होते हैं। शिक्षक, छात्रों के व्यक्तित्व को आकार देने और भविष्य को उज्जवल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें देश का एक आदर्श नागरिक बनाते हैं। शिक्षक, समाज के ऐसे शिल्पकार होते हैं जो बिना किसी मोह के इस समाज को तराशने का काम करते हैं। शिक्षक का काम सिर्फ किताबी ज्ञान देना ही नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थितियों से विद्यार्थियों को परिचित कराना भी होता है। शिक्षकों की इसी महत्ता को सही स्थान दिलाने के लिए ही हमारे देश में सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने सार्थक प्रयास किए। आपने जाति-रहित और वर्ग-रहित समाज की स्थापना पर जोर दिया। डॉ. राधाकृष्णन 27 बार नोबेल पुरस्कार के लिए नामित हुए। भारत सरकार ने उन्हें 1954 में सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया।

शिक्षकों की सेवाभावना दूसरी सब सेवाओं से अद्वितीय और अलग होती है। शिक्षक के सम्मान में पूरी दुनिया झुकती है। 56 देशों की संस्कृतियों में शिक्षक का स्थान सबसे ऊपर है। अलग-अलग देशों में शिक्षक दिवस अलग-अलग दिन है। यूनेस्को ने 5 अक्टूबर को वर्ल्ड टीचर डे घोषित किया है। यह दुनिया भर के शिक्षकों के मुद्दों को उठाने का दिन है। डॉ राधाकृष्णन ने कहा था, 'योग्य शिक्षक वही है जिसके अंदर विद्यार्थी जिंदा रहता है। एक शिक्षक से हमें यही उम्मीद रहती है कि वह जो भी बोले- सही, शुद्ध और सच बोले। एक शिक्षक एक शिल्पकार की तरह होता है जो अपने विद्यार्थियों को सही ज्ञान प्रदान करके उनको योग्य नागरिक बनाता है। इसीलिए किसी भी देश को महान और गौरवशाली बनाने में शिक्षकों की अहम् भूमिका होती है।'

डॉ राधाकृष्णन ने कहा था, 'शिक्षा का मतलब सिर्फ जानकारी देना ही नहीं है। जानकारी का अपना महत्व है लेकिन बौद्धिक झुकाव और लोकतांत्रिक भावना का भी महत्व है। क्योंकि इन भावनाओं के साथ विद्यार्थी उत्तरदायी नागरिक बनते हैं।' उनका मानना था कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होंगे, तब तक शिक्षा को मिशन का रूप नहीं मिल पाएगा। डा. राधाकृष्णन सामाजिक बुराइयों को हटाने के लिए शिक्षा को ही कारगर हथियार मानते थे। शिक्षा को मानव व समाज का सबसे बड़ा आधार मानने वाले डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शैक्षिक जगत में अविस्मरणीय अतुलनीय योगदान रहा है। आपने भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन भी किया।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।